१ फारबिसगंज, बिहार

बापू मेरे
देख कभी
क्या ठीक हो रहा देश में ?

बची नहीं है, त्याग - तपस्या
लालच की जीभ मचलती
सिंहासन की चाहत में ही
क्या मारा - मारी चलती

शीश नवा
प्रतिमा पर तेरी
झूठ रो रहा देश में

डाल - डाल चीलों का अड्डा
सब शिकार को हैं आकुल
उधर धरा बारूद बिछी है
इधर क्षुधा से जन व्याकुल

अवसर देख पड़ोसी
विष का बीज
बो रहा देश में

अच्छाई को दफना कर क्यों
मुर्दों की चर्चा करता
जो बात करे सच्ची हरदम
दंड वही केवल भरता

जिसका मुँह खुल गया
उसी को खूब
धो रहा देश में

२

महल ढला था
सपनों में
बिरजू ! तूँ तो नहीं ढला

किस्मत में बाढ़ भयंकर थी
पौरुष तेरा नहीं बहा
बेटी का व्याह टला तो क्या
श्रम - साहस तो पास रहा

बर्फ पिघल सकती है, पर
मन का लोहा नहीं गला

दुख तो स्वतः व्यंग्य जीवन का
आया है --- कट जाएगा
क्या कड़ुआ क्या मीठा रिश्ता
रस्सी - सा बँट जाएगा

मूरख तो मूरख
उसकी
गाली से कब हृदय जला

जीवन होगा आसपास तो
बाग - बगीचा भी होगा
घर के द्वारे छाँव नीम की
पंछी डेरा भी होगा

घर में घर से
मुक्त रहा
आती - जाती रही बला